दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में प्रयुक्त भाषा

डॉ0 पुनीत कुमार
(प्रवक्ता– हिन्दी विभाग)
डिग्री कालेज उपरदहा,
बरौत, प्रयागराज

लेख सारांश :

काव्य सौन्दर्य के समस्त अभिव्यक्ति माध्यमों में भाषा सर्वप्रमुख है। भाषा की अर्थमयी चेतना जब रसमयी होकर कवि के भावों को अभिव्यक्त करती है, तो वही भाषा काव्य–भाषा कहलाती है। काव्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा ग़ज़लों की भाषा कहीं अधिक सरस तथा कोमल है। परवर्ती ग़ज़लों की अपेक्षा हिन्दी ग़ज़ल ने हिन्दी भाषा के साथ अन्य भाषाओं को भी इस तरह आत्मसात कर लिया है कि जनसामान्य इन्हें आसानी से समझ लेता है। कहावतें, लोकोक्तियाँ, मुहावरें एवं विदेशी शब्दों के प्रयोग ने हिन्दी ग़ज़ल की भाषा को अधिक प्राणवान बनाया है। हिन्दी ग़ज़लों में भाषा के दो रूप–उर्दू मिश्रित तथा संस्कृतनिष्ठ दिखाई देते हैं। उर्दू मिश्रित भाषा के हिन्दी ग़ज़लकारों में शमशेर और दुष्यन्त कुमार सबसे आगे हैं।

दुष्यन्त कुमार के ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है, जिसमें एक तरह की सजीवता एवं स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं। 'साये में धूप' की ग़ज़लों में भाषा का एक मिला–जुला रूप है, जिसके तीन रूप दिखाई देते हैं,–उर्दू या अरबी–फारसी मिश्रित शब्द, देशज शब्द एवं शुद्ध हिन्दी शब्द। दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में भाषा के इन विविध रूपों का प्रयोग बड़ी ही सहजता के साथ किया गया है।

- किसी भी काव्य का सौन्दर्य उसके अनुभूति और अभिव्यक्ति में ही निहित है। काव्य के सौन्दर्य का सम्प्रेषण भाषा, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब, छन्द इत्यादि कई माध्यमों से सम्पन्न होता है। कवि अपनी योग्यता और आवश्यकतानुसार इनका उपयोग करता है, जिससे उसकी अनुभूति और कल्पना का संचार पाठकों तक गहनता के साथ पहुँच सके। ''अनुभूति की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। अर्थमयी चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम तो भाषा ही है। कवि की यह चेतना जब रसमयी बन जाती है, तो उसकी अभिव्यक्ति केवल भाषा ही नही, अपितु काव्य भाषा कहलाती है। इसलिए सामान्य साहित्य–भाषा से काव्य–भाषा अधिक सरस तथा प्रभावशाली होती है।''[1]

हिन्दी में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और अंग्रेजी में आई0ए0रिचर्ड्स द्वारा किया गया काव्य–भाषा सम्बन्धी विवेचन महत्वपूर्ण है। आचार्य शुक्ल ने अपने निबन्ध 'कविता क्या है?' में काव्य–भाषा की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया है। ''सर्वप्रथम, काव्य–भाषा मूर्ति–विधायिनी होनी चाहिए, दूसरे उसमें जाति संकेत वाले शब्दों की अपेक्षा विशेष रूप–व्यापार सूचक शब्द अधिक रहते हैं, तीसरे उसमें साभिप्राय विशेषणों का प्रयोग होना चाहिए और चौथे उसमें वर्ण–विन्यास और नाद–सौन्दर्य होना चाहिए, ऐसी काव्य–भाषा ही भावों को प्रेषणीय बनाती है।''[2] इस सम्बन्ध में श्यामसुन्दर दास की परिभाषा भी महत्वपूर्ण है–''कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा, जिसमें भावों का व्यंजन होता है, कविता है।......... बिना भाषा के भाव नहीं रह सकता। भाषा स्वयं ही भाव की मूर्ति है। इस तथ्य पर विचार करने से कविता के भाव–पक्ष और कला–पक्ष में अभेद की स्थापना हो जाती है। भावों की साधना भाषा की साधना के साथ–साथ चल सकती है और चलनी चाहिए।''[3] कविता वस्तुतः भाषा की साधना है। ''भाषा का व्यवहार यों तो सभी करते हैं, पर सच्चा कवि उसे अपनी वशवर्तिनी बनाकर रखता है। वह शब्द–शिल्पी और भाषा की प्रकृति से पूर्ण परिचित होता है। भाषा की प्रकृति से परिचित होने के कारण वह काव्य–भाषा में आकर्षण और सौन्दर्य उत्पन्न करके उसे उत्कृष्ट बनाता है।''[4]

काव्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा ग़ज़लों की भाषा में कहीं अधिक ही कोमलता एवं मिठास का अनुभव होता है। ''ग़ज़ल के लिए भाषा में सरलता, सहजता, सरसता एवं प्रभावोत्पादकता आवश्यक गुण है।''[5]

ग़ज़ल भाषा के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त करते हुए मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' ने स्पष्ट किया है कि, ''ग़ज़लों में आवश्यक है कि अन्य काव्य–रूपों की अपेक्षा सादगी और सरलता का अधिक ध्यान रखा जाए।''[6]

इस तरह देखा जाए तो किसी ग़ज़ल की लोकप्रियता के लिए उसकी भाषा का सरस एवं प्रवाहमयी होना आवश्यक है। परवर्ती ग़ज़लें भाषा की जटिलता तथा भारी–भरकम एवं क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग के कारण ही उस प्रसि़द्धि को प्राप्त न कर सकी जैसी की आधुनिक ग़ज़लों ने की और सर्व–साधारण से भी सर्वथा दूर हो गयी।

हिन्दी ग़ज़ल शैली ने हिन्दी भाषा के साथ अन्य भाषाओं को भी इस तरह आत्मसात् कर लिया है कि जन–सामान्य इन्हें आसानी से समझ लेता है। ''संक्षेपतः यही कहा जाना चाहिए कि हिन्दी ग़ज़ल भाषा का अपना स्वरूप है, जिसमें मुहावरा हिन्दी का है और भावों की समुचित अभिव्यक्ति के लिए विदेशी भाषाओं–मुख्यतः अरबी–फारसी शब्दों का और आवश्यकता पड़ने पर

यत्र–तत्र अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। हिन्दी ग़ज़ल की शब्दावली में देशज भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। हिन्दी ग़ज़ल की शब्दावली में देशज शब्दों को भी स्थान मिला है। कहावतों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग ने हिन्दी ग़ज़ल की भाषा के स्वरूप को और अधिक प्राणवान बनाया है।''[7]

''हिन्दी ग़ज़लों की भाषा में हमें दो प्रवाह दिखाई देते हैं– एक उर्दू मिश्रित भाषा और दूसरी संस्कृतनिष्ठ। उर्दू मिश्रित हिन्दी ग़ज़लें लिखने वालों में शमशेर और दुष्यन्त कुमार सबसे आगे हैं।''[8]

''साये में धूप की ग़ज़लों में दुष्यन्त कुमार ने जिस भाषा का प्रयोग किया है, वह आम बोलचाल की भाषा है। उसमें एक तरह की सजीवता एवं स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं। जहाँ 'साये में धूप' की ग़ज़लों में अरबी–फारसी शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है, वहाँ उन्होंने शुद्ध हिन्दी एवं देशज शब्दों का भी प्रयोग उतनी ही सहजता से किया है।''[9] दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में भाषा का जो मिला–जुला रूप है वह उनकी लोकप्रियता का परिचायक है, वह उन्हें सर्वसाधारण के और करीब ले जाता है, जिसमें अपनेपन का एहसास होता है।

अपनी भाषा के सम्बन्ध में स्वयं दुष्यन्त कुमार ने कहा है–''एक बात इन ग़ज़लों की भाषा के बारे में मुझे और कहनी है जिसे लेकर शुरू–शुरू में सबसे अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। मेरी दिक्कत यह थी कि उर्दू मैं जानता नहीं और हिन्दी में वह चुहल, वह मुहावरा और बोलचाल का वह बहाव नहीं मिला, जिसके सहारे ग़ज़ल कही जाती है या ज्यादातर लोगों की जुबान पर चढ़ा है। मगर यही अज्ञानता मेरे लिए एक शक्ति बन गयी क्योंकि मुझे लगा कि आम–आदमी एक मिली–जुली जुबान बोलता है। वह न तो शुद्ध उर्दू होती है और न शुद्ध हिन्दी। इसलिए मैंने उस भाषा की तलाश की जो हिन्दी को हिन्दी और उर्द को उर्दू दिखाई दे और आम आदमी उसे अपनी जबान समझकर अपना सकें।''[10]

'साये में धूप' की ग़ज़लों में हमें भाषा के तीन रूप दिखाई देते हैं जिनका विश्लेषण निम्नलिखित चरणों में प्रस्तुत है–

1. **उर्दू या अरबी–फारसी मिश्रित शब्दों का प्रयोग**–''हिन्दी में ग़ज़ल लेखन उर्दू ग़ज़ल के प्रभाव से जन्मा है। ग़ज़ल की यात्रा फारसी से आरम्भ होकर उर्दू में होती हुई हिन्दी तक की यात्रा है। अतः हिन्दी ग़ज़ल में फारसी और उर्दू के शब्दों का प्रयोग होना स्वाभाविक है।''[11]

''उर्दू–फारसी के इन प्रचलित शब्दों के प्रयोग से हिन्दी ग़ज़ल की भाषा में एक विशेष आकर्षण उत्पन्न हुआ है।''[12] दुष्यन्त कुमार ने भी अपनी ग़ज़लों की भाषा के लिए इस परिपाटी को अपनाया है।

''साये में धूप की ग़ज़लों में अरबी–फारसी के शब्दों की भरमार है। ये सारे शब्द सहज रूप में आये हैं। इसलिए इस संग्रह की भाषा में एक तरह की ताजगी के दर्शन होते हैं।''[13] 'साये में धूप' संग्रह की ग़ज़लों के कुछ शेरों को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है–

''ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा,
मै सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा।''[14]

प्रस्तुत शेर में 'जिस्म' और 'सजदा' दोनों शब्द फारसी से लिये गये हैं।

''इस कदर पाबन्दी–ए–मजहब कि सदके आपके,
जब से आजादी मिली है, मुल्क में रमजान है।''[15]

इस शेर में भी अधिकतम शब्द जैसे–'मजहब', सदके, मुल्क, रमजान' आदि अरबी–फारसी से ही लिये गये हैं।

''अगर खुदा न करे सच ये ख्वाब हो जाए,
तेरी सहर हो मेरा आफताब हो जाए।''[16]

''इस शेर में खुदा, ख्वाब और आफताब' फारसी के शब्द हैं और 'सहर' शब्द अरबी भाषा का है।''[17] इसी क्रम में एक और शेर देखें–

''होने लगी है जिस्म में जुम्बिश तो देखिए,
इस परकटे परिन्दे की कोशिश तो देखिए।''[18]

इसमें जिस्म, जुम्बिश, कोशिश शब्द फारसी भाषा के हैं।

''वो आदमी मिला था मुझे उसकी बात से,
ऐसा लगा कि वो भी बहुत बेज़बान है।''[19]

इस शेर में वैसे तो अधिकतम शब्द हिन्दी के हैं फिर भी 'आदमी' अरबी तथा बेज़बान फारसी भाषा का शब्द है।

इस तरह देखें तो दुष्यन्त कुमार ने अपनी ग़ज़ल के अधिकतम शेरों में अरबी–फारसी मिश्रित शब्दावली का बहुतायत प्रयोग किया है।

2. देशज शब्दों का प्रयोग –

दुष्यन्त कुमार की ग़ज़ल के कुछ शेरों में देशज शब्दों का भी प्रयोग देखने को मिलता है। ''देशज शब्दों के विषय में केवल इतना कहना पर्याप्त होगा कि ये शब्द परम्परागत अर्थ में तत्सम व तद्भव से भिन्न प्रकार के होते हैं। ''[20] ये वो शब्द होते हैं जिनकी व्युत्पत्ति का पता न चल पाने के कारण इन्हें 'अज्ञात–व्युत्पत्तिक' नामक शब्द वर्ग में रखा जा सकता है। ''इस प्रकार देशज शब्दों को 'अज्ञात–व्युत्पित्तिक' कहना उचित प्रतीत होता है, क्योंकि इनकी व्युत्पत्ति और विकास विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।[21] सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि इनका जन्म इसी देश में हुआ और इसके जन्मदाता सामान्य अथवा आम लोग हैं।

''दुष्यन्त कुमार ने अपनी कुछ ग़ज़लों में देशज शब्दों से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। देशज से तात्पर्य इस देश में पैदा हुए शब्द हैं। इस देश का आम आदमी बोलचाल में जिन शब्दों का प्रयोग करता है।''[22] दुष्यन्त कुमार के कुछ शेर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हैं–

''मैं जिसे ओढ़ता विछाता हूँ,
वो ग़ज़ल आपको सुनाता हूँ।
तू किसी रेल–सी गुजरती है,
मैं किसी पुल–सा थरथराता हूँ।''[23]

इन शेरों में ओढ़ना–बिछाना, रेल, पुल, थरथराना आदि देशज शब्द कहलाते हैं।

''लपट आने लगी है अब हवाओं में,
ओसारे और छप्पर फेंक दो तुम भी।''[24]

इसमें लपट, ओसारे, छप्पर आदि देशज शब्द हैं।

3. शुद्ध हिन्दी शब्दों का प्रयोग –

दुष्यन्त कुमार हिन्दी ग़ज़लकार हैं और ''हिन्दी ग़ज़ल में जैसा कि नाम से ही अभिव्यक्त होता है, हिन्दी शब्दों की बहुलता है। हिन्दी कवियों द्वारा संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। तत्सम शब्दों के प्रयोग से हिन्दी ग़ज़ल के अभिव्यंजन–शिल्प में अपेक्षित वृद्धि हुई है। सुकुमार एवं सुचिकरण शब्द पाठक और श्रोता के हृदय पर एक विशेष प्रभाव छोड़ते हैं।''[25] दुष्यन्त कुमार के ग़ज़ल संग्रह ''साये में धूप की ग़ज़लों में संस्कृतनिष्ठ एवं तत्सम शब्दावली का बड़ा ही सहज एंव सार्थक प्रयोग हुआ है।''[26]

उदाहरण के लिए दुष्यन्त कुमार की ग़ज़ल के ये शेर दृष्टव्य हैं–

'' मत कहो आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।
सूर्य हमने भी नहीं देखा सुबह से,
क्या करोगे, सूर्य का क्या देखना है?
पक्ष–औ–प्रतिपक्ष संसद में मुखर हैं,
बात इतनी है कि कोई पुल बना है।
रक्त वर्षों से नसों में खौलता है,
आप कहते हैं क्षणिक उत्तेजना है।
दोस्तों! अब मंच पर सुविधा नहीं है,
आजकल नेपथ्य में संभावना है।''[27]

इन शेरों में आकाश, व्यक्तिगत, आलोचना, सूर्य, पक्ष, प्रतिपक्ष, संसद, मुखर, रक्त, वर्ष, क्षणिक, उत्तेजना, सुविधा, नेपथ्य संभावना आदि शब्द तत्सम एवं संस्कृत–निष्ठ हैं।

''उनको क्या मालूम विरूपित इस सिकता पर क्या बीती,
वो आए तो यहाँ शंख सीपियाँ उठाने आएँगे।
रह–रह आँखों मे चुभती है पथ की निर्जन दोपहरी,
आगे और बढ़े तो शायद दृश्य सुहाने आएँगे।
मेले में भटके होते तो कोई घर पहुँचा जाता,
हम घर में भटके हैं, कैसे ठौर–ठिकाने आएँगे।
हम क्या बोलें इस आंधी में कई घरौंदे टूट गए,
इन असफल निर्मितियों के शव कल पहचाने जाएँगे।''[28]

इसमें विरूपित, शंख, सीपियाँ, पथ, निर्जन, दृश्य, निर्मितियों जैसे शब्द तत्सम अथवा संस्कृतनिष्ठ हैं तो आँखों, दोपहरी, घर ठौर–ठिकाने आँधी आदि शब्द तद्भव से लिये गये हैं।

सन्दर्भ :

1. हिन्दी ग़ज़ल का सौन्दर्यशास्त्र/डॉ० राम प्रकाश 'पथिक'/जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2004/पृ0 145

2. चिन्तामणि, भाग–1/आचार्य रामचन्द्र शुक्ल/लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2012/पृ0 175

3. साहित्यालोचन/श्यामसुन्दर दास/लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद/पृ0 72–73

4. छायावाद युग/डॉ0 शम्भूनाथ सिंह/पृ0 293

5. साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल/डॉ0 मधु खराटे/विद्या प्रकाशन कानपुर, 2002/पृ0 17

6. मुकद्दमा–ए–शेर–ओ–शायरी/मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली'/नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967/पृ0 111

7. हिन्दी ग़ज़ल का सौन्दर्यशास्त्र/डॉ0 राम प्रकाश 'पथिक'/जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2004/पृ0 147

8. साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल /डॉ0 मधु खराटे/विद्या प्रकाशन कानपुर, 2002/पृ0 25

9. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन/डॉ0 सरदार मुजावर/वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003/पृ0 45

10. सारिका/सं0 कमलेश्वर/मई 1975

11. हिन्दी ग़ज़ल का सान्दर्यशास्त्र/डॉ0 राम प्रकाश 'पथिक/जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2004/पृ0 147

12. वही/ पृ0 147

13. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन/डॉ0 सरदार मुजावर/वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003/पृ0 45

14. साये में धूप/दुष्यन्त कुमार/राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975/पृ0 15

15. वही / पृ0 57

16. वही / पृ0 40

17. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन / डॉ0 सरदार मुजावर / वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 / पृ0 46

18. साये में धूप / दुष्यन्त कुमार / राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975 / पृ0 61

19. वही / पृ0 59

20. धूप हमारे हिस्से की / विजय सिंहल / दिशा प्रकाशन, दिल्ली, 1986 / पृ0 43

21. हिन्दी ग़ज़ल का सौन्दर्यशास्त्र / डॉ0राम प्रकाश 'पथिक' / जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2004 / पृ0 150

22. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन / डॉ0 सरदार मुजावर / वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 / पृ0 46

23. साये में धूप / दुष्यन्त कुमार / राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975 / पृ0 62

24. वही / पृ0 33

25. हिन्दी ग़ज़ल का सौन्दर्यशास्त्र / डॉ0 राम प्रकाश 'पथिक' / जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2004 / पृ0148

26. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन / डॉ0 सरदार मुजावर / वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 / पृ0 46

27. साये में धूप / दुष्यन्त कुमार / राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975 / पृ0 27

28. वही / पृ0 35